7 हार की जीत

सुदर्शन

[**जन्म** : सन् 1896 ई.; **निधन** : सन् 1968 ई.]

'सुदर्शन' का मूल नाम बदरीनाथ शर्मा था। आपका जन्म पंजाब के सियालकोट में हुआ था। जब आप छठवें दर्जे में थे, तभी आपने प्रथम कहानी लिखी थी। प्रेमचंद की तरह आपने भी उर्दू में लेखन प्रारंभ किया तत्पश्चात् हिन्दी में लिखने लगे। नाटक, कहानी तथा उपन्यास लिखकर हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया।

प्रस्तुत कहानी सुदर्शन जी द्वारा लिखित एक उपदेश प्रधान कथा है जो मानव-भावनाओं पर आधारित है। बाबा भारती के अनोखे घोड़े की चर्चा डाकू खड़गसिंह के कानों तक पहुँचती है। वह धोखे से घोड़ा ले जाता है। परंतु बाबा भारती की एक बात उसे घोड़ा लौटाने पर मजबूर कर देती है। उसी बात ने उस डाकू का हृदय परिवर्तन कर दिया, इसी बात पर यहाँ प्रकाश डाला गया है।

इस कहानी में विनम्रता, उदारता, पश्चात्ताप, दयाभाव, लोकहित की आकांक्षा आदि मूल्यों को समाविष्ट किया गया है।

माँ को अपने बेटे और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जो आनंद आता है, वही आनंद बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर आता था। भगवद्भजन से जो समय बचता, वह घोड़े को अर्पण हो जाता। वह घोड़ा बहुत ही सुंदर और बलवान था। इसके जोड़ का घोड़ा सारे इलाक़े में न था। बाबा भारती उसे 'सुलतान' कहकर पुकारते, अपने हाथ से खरहरा करते, खुद दाना खिलाते और देख-देखकर प्रसन्न होते थे। उन्होंने रूपया, माल असबाब, ज़मीन आदि अपना सब कुछ छोड़ दिया था। यहाँ तक कि उन्हें नगर के जीवन से भी घृणा थी। अब गाँव के बाहर एक छोटे से मंदिर में रहते और भगवान का भजन करते थे। "मैं सुलतान के बिना नहीं रह सकूँगा" उन्हें ऐसा लगने लगा था। वे उसकी चाल पर लट्टू थे। कहते, ऐसे चलता है, जैसे मोर घटा को देखकर नाच रहा हो। जब तक संध्या के समय सुलतान पर चढ़कर आठ-दस मील का चक्कर न लगा लेते, उन्हें चैन न आता।

खड़गसिंह उस इलाक़े का कुख्यात डाकू था। लोग उसका नाम सुनकर काँपते थे। होते-होते सुलतान की कीर्ति उसके कानों तक भी पहुँची। उसका हृदय उसे देखने के लिए अधीर हो उठा। वह एक दिन दोपहर के समय बाबा भारती के पास पहुँचा और नमस्कार करके बैठ गया।

बाबा भारती ने पूछा, "खड़गसिंह, क्या हाल है?"

खड़गसिंह ने सिर झुकाकर उत्तर दिया, "आपकी दया है।"

"कहो, इधर कैसे आ गए?"

"सुलतान की चाह खींच लाई।"

"विचित्र जानवर है। देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे।"

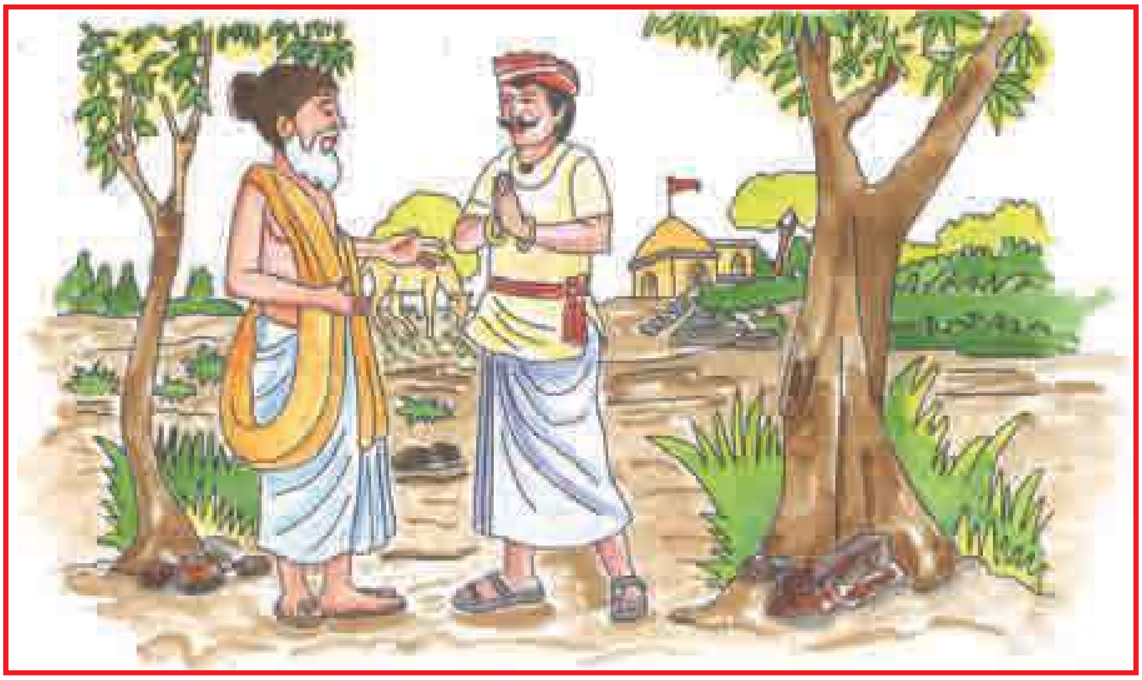

"मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी है।"

"उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी।"

"कहते हैं, देखने में भी बड़ा सुंदर है।"

"क्या कहना! जो उसे एक बार देख लेता है, उसके हृदय पर उसकी छवि अंकित हो जाती है।"

"बहुत दिनों से अभिलाषा थी, आज उपस्थित हो सका हूँ।"

बाबा भारती और खड़गसिंह अस्तबल में पहुँचे। बाबा ने घोड़ा दिखाया घमंड से, खड़गसिंह ने घोड़ा देखा आश्चर्य से। उसने सहस्रों घोड़े देखे थे, परंतु ऐसा बाँका घोड़ा उसकी आँखों से कभी न गुज़रा था। सोचने लगा, भाग्य की बात है। ऐसा घोड़ा खड़गसिंह के पास होना चाहिए था। इस साधु को ऐसी चीज़ों से क्या लाभ? कुछ देर तक आश्चर्य से खड़ा रहा। इसके पश्चात उसके हृदय में हलचल होने लगी। बालकों की-सी अधीरता से बोला, "परंतु बाबा जी, इसकी चाल न देखी तो क्या!"

बाबा जी भी मनुष्य ही थे। अपनी वस्तु की प्रशंसा दूसरे के मुख से सुनने के लिए उनका हृदय अधीर हो गया। घोड़े को खोलकर बाहर ले गए। घोड़ा वायुवेग में उड़ने लगा। घोड़े की चाल देखकर उसके हृदय पर साँप लोट गया। वह डाकू था और जो वस्तु उसे पसंद आ जाए, उस पर वह अपना अधिकार समझने लगता था। उसके पास बाहुबल था और आदमी थे। जाते-जाते उसने कहा, "बाबा जी, मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।"

बाबा भारती डर गए। अब उन्हें रात को नींद न आती। सारी रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी। प्रतिक्षण खड़गसिंह का डर लगा रहता था परंतु कई महीने बीत गए और वह न आया। यहाँ तक कि बाबा भारती कुछ असावधान हो गए।

संध्या का समय था। बाबा भारती सुलतान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे। इस समय उनकी आँखो में चमक थी, मुख पर प्रसन्नता। कभी घोड़े के शरीर को देखते, कभी उसके रंग को और वह मन में फूले न समाते थे।

सहसा एक ओर से आवाज़ आई – ''ओ बाबा! इस कँगले की सुनते जाना।''

आवाज़ में करुणा थी। बाबा ने घोड़े को रोक लिया। देखा, एक अपाहिज वृक्ष की छाया में पड़ा कराह रहा है। बोले, ''क्यों, तुम्हें क्या कष्ट है?''

अपाहिज ने हाथ जोड़कर कहा – ''बाबा, मैं दुखियारा हूँ। मुझ पर दया करो। रामावाला यहाँ से तीन मील है। मुझे वहीं जाना है। घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा भला करेगा।''

''वहाँ तुम्हारा कौन है?''

''दुर्गादत्त वैद्य का नाम सुना होगा। उनका सौतेला भाई हूँ।''

बाबा भारती ने घोड़े से उतरकर अपाहिज को घोड़े पर बैठा लिया और स्वयं उसकी लगाम पकड़कर धीरे-धीरे चलने लगे।

सहसा उन्हें एक झटका-सा लगा और लगाम हाथ से छूट गई। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने देखा कि अपाहिज घोड़े की पीठ पर तनकर बैठा है और घोड़े को दौड़ाए लिए जा रहा है। उनके मुख से भय, विस्मय और निराशा से मिली हुई चीख निकल गई। वह अपाहिज डाकू खड़गसिंह था।

बाबा भारती कुछ देर तक तो चुप रहे। इसके पश्चात कुछ निश्चय कर पूरे बल से चिल्लाकर बोले – ''ज़रा ठहर जाओ!''

खड़गसिंह ने आवाज़ सुनकर घोड़ा रोक लिया। उसकी गरदन पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा – ''बाबा जी, यह घोड़ा अब न दूँगा।''

''मगर एक बात सुनते जाओ।''

खड़गसिंह ठहर गया। बाबा भारती ने निकट जाकर उसकी ओर ऐसी आँखों से देखा, जैसे बकरा कसाई की ओर देखता है। फिर कहा – ''यह घोड़ा तुम्हारा हो चुका। मैं तुमसे इसे वापस करने के लिए नहीं कहूँगा। परंतु खड़गसिंह, केवल एक प्रार्थना करता हूँ। उसे अस्वीकार न करना, नहीं तो मेरा दिल टूट जाएगा।''

''बाबा जी, आज्ञा कीजिए। मैं आपका दास हूँ, केवल यह घोड़ा न दूँगा।''

''अब घोड़े का नाम न लो। मैं तुमसे इसके विषय में कुछ न कहूँगा। मेरी प्रार्थना केवल यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रगट न करना।''

खड़गसिंह का मुँह आश्चर्य से खुला रह गया। उसका विचार था कि उसे घोड़े को लेकर यहाँ से भागना पड़ेगा, परंतु बाबा भारती ने स्वयं उससे कहा – ''इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।'' इससे क्या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है? खड़गसिंह ने बहुत सोचा, बहुत सिर मारा, परंतु कुछ समझ न सका। हारकर उसने अपनी आँखें बाबा भारती के चेहरे पर गड़ा दीं और पूछा – ''बाबा जी, इसमें आपको क्या डर है?''

सुनकर बाबा भारती ने उत्तर दिया – ''लोगों को अगर इस घटना का पता लग गया, तो वे किसी गरीब का विश्वास न करेंगे।'' यह कहते-कहते उन्होंने सुलतान की ओर से इस तरह मुँह मोड़ लिया, जैसे उनका कोई संबंध ही नहीं रहा हो।

बाबा भारती चले गए, परंतु उनके शब्द खड़गसिंह के कानों में उसी प्रकार गूँज रहे थे। सोचता था, कैसे ऊँचे विचार हैं, पवित्र भाव हैं। उन्हें इस घोड़े से प्रेम था। इसे देखकर उनका मुख फूल की नाई खिल जाता था। कहते थे – ''इसके बिना मैं न रह सकूँगा।'' इसकी रखवाली में वे कई रात सोए नहीं। भजन-भक्ति न कर, रखवाली करते रहे। परंतु आज उनके मुख पर दु:ख की रेखा तक दिखाई न पड़ती थी। उन्हें केवल यह ख़्याल था कि कहीं लोग गरीबों पर विश्वास करना न छोड़ दें। ऐसा मनुष्य, मनुष्य नहीं, देवता है।

रात्रि के अंधकार में खड़गसिंह बाबा भारती के मंदिर में पहुँचा। चारों ओर सन्नाटा था। आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे। थोड़ी दूर पर गाँवों के कुत्ते भौंक रहे थे। मंदिर के अंदर कोई शब्द सुनाई न देता था। खड़गसिंह सुलतान की बाग पकड़े हुए था। वह धीरे-धीरे अस्तबल के फाटक पर पहुँचा। फाटक खुला पड़ा था। किसी समय वहाँ बाबा भारती स्वयं लाठी लेकर पहरा देते थे, परंतु आज उन्हें किसी चोरी, किसी डाके का भय न था। खड़गसिंह ने आगे बढ़कर सुलतान को उसके स्थान पर बाँध दिया और बाहर निकलकर सावधानी से फाटक बंद कर दिया। इस समय उसकी आँखों में नेकी के आँसू थे।

रात्रि का तीसरा पहर बीत चुका था। चौथा पहर आरंभ होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से बाहर निकल ठंडे जल से स्नान किया। उसके पश्चात इस प्रकार जैसे कोई स्वप्न में चल रहा हो, उनके पाँव अस्तबल की ओर बढ़े। परंतु फाटक पर पहुँचकर उनको अपनी भूल प्रतीत हुई। साथ ही घोर निराशा ने पाँवों को मन-मन भर का बना दिया। वे वहीं रुक गए।

घोड़े ने अपने स्वामी के पाँवो की चाप को पहचान लिया और ज़ोर से हिनहिनाया।

अब बाबा भारती आश्चर्य और प्रसन्नता से दौड़ते हुए अंदर घुसे और अपने प्यारे घोड़े के गले से लिपटकर इस प्रकार रोने लगे, मानो कोई पिता बहुत दिन के बिछुड़े हुए पुत्र से मिल रहा हो। बार-बार उसकी पीठ पर हाथ फेरते, बार-बार उसके मुँह पर थपकियाँ देते।

फिर वे संतोष से बोले - ''अब कोई गरीबों की सहायता से मुँह नहीं मोड़ेगा।''

शब्दार्थ

करुणा दया **कीर्ति** यश **प्रशंसा** तारीफ़ **विचित्र** अनोखा **अधीर** बेचैन, उतावला **सहसा** अचानक **कंगाल** निर्धन **नेकी** भलाई **कुख्यात** बदनाम **चाप** पग ध्वनि **घृणा** नफरत **अभिलाषा** इच्छा **छवि** चित्र, तसवीर **वायुवेग** हवा की गति **प्रतिक्षण** हर पल **विस्मय** आश्चर्य **प्रयोजन** उद्देश्य **कंगला** कंगाल, निर्धन **अपाहिज** विकलांग **बाँका** सुंदर और बहादुर **असबाब** वस्तु, सामान **अस्तबल** तबेला, घुड़साल **खरहरा** वह कंघी या बुरुश जिससे घोड़े के रोंए साफ किए जाते हैं **बाग** घोड़े की लगाम

मुहावरें

लट्टू होना मोहित होना **फूला न समाना** अति प्रसन्न होना **आँख नीची होना** लज्जित होना **फूट-फूट कर रोना** बहुत रोना **साँप लोटना** ईर्ष्या होना **सिर मारना** अत्यधिक मानसिक परिश्रम करना

अभ्यास

प्रश्न 1. प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) खड़गसिंह का हृदय परिवर्तन क्यों हुआ?

(2) ''अब कोई गरीबों की सहायता से मुँह नहीं मोड़ेगा।'' बाबा भारती ने ऐसा क्यों कहा?

(3) यदि बाबा भारती की जगह आप होते तो क्या करते?

(4) ''इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।'' ऐसा बाबा भारती ने क्यों कहा?

प्रश्न 2. मान लो आपके गाँव की बैंक में लूट हुई। लूट किस गलती के कारण हुई होगी? लुटेरे कौन हो सकते हैं? इस घटना का अनुमान लगाइए और लूट या चोरी से बचने के लिए क्या-क्या सावधानी रखनी चाहिए? अपने दोस्तों के साथ चर्चा कीजिए।

प्रश्न 3. परिच्छेद पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

सोना अचानक आई थी, परंतु वह अब तक अपनी शैशवावस्था भी पार नहीं कर सकी थी। सुनहरे रंग का, रेशमी लच्छों की गाँठ के समान उसका कोमल लघु शरीर था, छोटा-सा मुँह और बड़ी-बड़ी पानीदार आँखें। देखती तो लगता था कि अभी छलक पडेंगी। लंबे कान, पतली सुडौल टाँगें, जिन्हें देखते ही प्रसुप्त गति की बिजली की लहर देखनेवालों की आँखों में कौंध जाती थी। सब उसके सरल, शिशु रूप से इतने प्रभावित हुए कि किसी चंपकवर्णा रूपसी के लिए उपयुक्त सोना, सुवर्णा आदि नाम उसका परिचय बन गए।

परंतु उस बेचारे हरिण-शावक की कथा तो मिट्टी की ऐसी व्यथा-कथा है, जिससे मनुष्य निष्ठुरता गढ़ती है। बेचारी सोना भी मनुष्य की इसी निष्ठुर मनोरंजनप्रियता के कारण अपने अरण्य परिवेश और स्वजाति से दूर मानव-समाज में आ पड़ी थी। प्रशांत वनस्थली में जब अलस भाव से मंथन करता हुआ मृग-समूह शिकारियों की आहट से चौंककर भागा, तब सोना की माँ सद्य: प्रसूता होने के कारण भागने में असमर्थ रही। सद्य: जात मृग शिशु तो भाग नहीं सकता था। अत: मृगी माँ ने अपनी संतान को अपने शरीर की ओट में सुरक्षित रखने के प्रयास में अपने प्राण दिए।

शब्दार्थ

लच्छा गुच्छा **शावक** हिरन का बच्चा **सद्य: प्रसूता** हाल या तत्काल ब्याई हुई **सद्य: जाता** तुरन्त जन्मा हुआ

(1) सही उत्तर पर ✓ का निशान लगाइए :

(क) सोनाहिरन का रंग कैसा था ?

लाल ☐ पीला ☐ सुनहरा ☐

(ख) मृग-समूह किसकी आहट से चौंक कर भागा?

पटाखे की ☐ शिकारियों की ☐ बादल की ☐

(2) रिक्त स्थान भरिए :

(क) सोना अब तक अपनी .... भी पार नहीं कर सकी थी।

(ख) हरिण-शावक की कथा तो मिट्टी की ऐसी .... है, जिसे मनुष्य की निष्ठुरता गढ़ती है।

(3) इन शब्दों के अर्थ लिखिए :

आहट – .... शैशवावस्था – ....

(4) इन शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

लघु – .... मानव – ....

(5) हरिण-शावक सोना की शारीरिक बनावट कैसी थी ?

प्रश्न 4. एक दिन बादशाह अकबर ने अपने दरबारियों से पूछा, ''बताओ दुनिया में सबसे अधिक शक्तिशाली कौन है ?'' दरबारियों का जवाब क्या होगा और बीरबल ने क्या कहा होगा ?

कहानी आगे बढ़ाइए ।

स्वाध्याय

प्रश्न 1. दिए गए शब्दों की सहायता से रिक्त स्थान भरिए :

(1) खड़गसिंह उस इलाके का .... डाकू था। **(प्रसिद्ध, कुख्यात)**

(2) अपनी वस्तु की प्रशंसा दूसरों के मुख से सुनने के लिए उनका हृदय .... हो गया था। **(धीर, अधीर)**

(3) "बाबा जी, आज्ञा कीजिए। मैं आपका .... हूँ, केवल यह घोड़ा न दूँगा।"
(दास, स्वामी)

प्रश्न 2. किसने, किससे कहा ?

(1) "दुर्गादत्त वैद्य का नाम सुना होगा। उनका सौतेला भाई हूँ।"
- अपाहिज ने बाबा भारती से
- बाबा भारती ने अपाहिज से

(2) "लोगों को अगर इस घटना का पता लग गया, तो वे किसी गरीब का विश्वास न करेंगे।"
- बाबा भारती ने खड़गसिंह से
- खड़गसिंह ने बाबा भारती से

प्रश्न 3. प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्य में लिखिए :

(1) खड़गसिंह बाबा भारती के पास क्यों आया?
(2) बाबा भारती किस बात से डर गए थे?
(3) सुलतान पर सवार खड़गसिंह ने बाबा भारती से क्या कहा?

प्रश्न 4. प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) बाबा भारती अपना समय कैसे बिताते थे?
(2) बाबा भारती को किसका डर लगने लगा? क्यों?
(3) खड़गसिंह ने सुलतान को कैसे प्राप्त किया?
(4) घोड़े को वापस आया देखकर बाबा भारती ने घोड़े से कैसा वर्ताव किया?

प्रश्न 5. टिप्पणी लिखिए :

बाबा भारती की महानता

प्रश्न 6. दिए गए शब्दों के अर्थ से शब्द-पहेली पूर्ण कीजिए :

नीचे ↓	सीधे →
(1) इच्छा	(1) बेचैन
(2) उद्देश्य	(2) बड़ाई
(3) अचानक	(3) सत्य
(4) दया	(4) नभ
	(5) नफरत

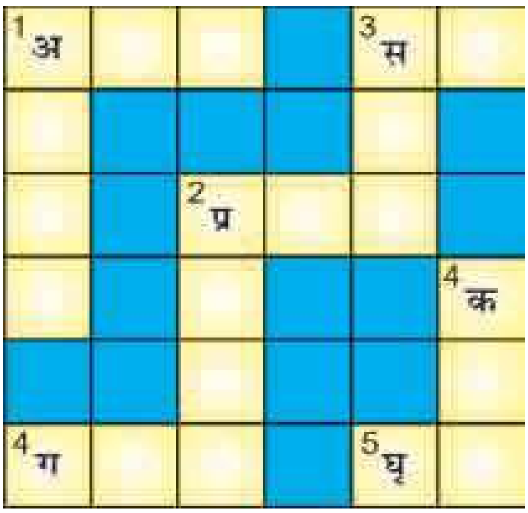

प्रश्न 7. दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखकर उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए :

सुंदर, जमीन, संध्या, गरीब, विश्वास

प्रश्न 8. दिए गए शब्दों में उचित उपसर्ग जोड़कर नए शब्द बनाइए :

(प्रति, निर्)

(1) .... + दिन = ...　　(2) .... + आधार = ...

(3) .... + मूल = ...　　(4) .... + कूल = ...

(5) .... + जल = ...　　(6) .... + दोष = ...

प्रश्न 9. दिए गए शब्दों में प्रत्यय जोड़कर नए शब्द बनाइए :

(इक, त्व)

(1) मुख + ... = ...　　(2) मनुष्य + ... = ...

(3) भूत + ... = ...　　(4) मम + ... = ...

(5) समाज + ... = ...　　(6) सम + ... = ...

प्रश्न 10. निम्नलिखित वाक्यों में से विशेषण पहचानकर उनका अन्य वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

जैसे – खड़्गसिंह इस इलाके का कुख्यात डाकू था।

विशेषण : कुख्यात

वाक्य : कुख्यात आदमी से लोग डरते हैं।

(1) कहते हैं, देखने में भी बड़ा सुंदर है।

(2) परंतु ऐसा बाँका घोड़ा उसकी आँखों से कभी न गुज़रा था।

(3) बाबा भारती ने ठंडे जल से स्नान किया।

(4) अपने प्यारे घोड़े से लिपटकर रोने लगे।

(5) बाबा भारती प्रसिद्ध साधु थे।

योग्यता विस्तार

- इस कहानी को एकांकी के रूप में लिखकर प्रार्थना संमेलन में मंचन कीजिए।
- साधु, डाकू, अपाहिज और घोड़े के मुखौटे अपनी कक्षा में शिक्षक की सहायता से बनाइए।
- आपके विस्तार में कोई संत पुरुष या प्रेरणादायी व्यक्ति हों, तो उनके बारे में लिखिए।